



हिंदूकुश हिमालय पर्वत

 drishtiias.com/hindi/printpdf/hindu-kush-himalayan-mountains

पिरलिम्स के लिये:

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, हिंदूकुश हिमालय पर्वत

मेन्स के लिये:

भारत के लिये हिंदूकुश हिमालय पर्वत की भूमिका

चर्चा में क्यों?

संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम के अनुसार, हिंदूकुश हिमालयन (HKH) पर्वत श्रृंखलाएँ वर्ष 2100 तक अपनी दो-तिहाई बर्फ से विहीन सकती हैं।

वर्ष 2100 तक लगभग 2 अरब लोगों को भोजन, पानी की कमी का सामना करना पड़ सकता है।

प्रमुख बिंदु:

HKH क्षेत्र:

- इसे अक्सर पृथ्वी पर 'तीसरे ध्रुव' के रूप में जाना जाता है, यह भारत, नेपाल और चीन सहित आठ देशों में 3,500 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।
- इसमें अंटार्कटिका और आर्कटिक के बाद जमे हुए पानी का दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा भंडारण है।
- इस क्षेत्र के पहाड़ों में 240 मिलियन से अधिक लोग रहते हैं। 1.7 अरब नदी घाटियों में नीचे की ओर रहते हैं, जबकि इन घाटियों में उगाए जाने वाले भोजन तीन अरब लोगों तक पहुँचते हैं।
- ग्लेशियर कम से कम 10 प्रमुख नदी प्रणालियों को जीवित रखते हैं जो इस क्षेत्र में कृषि गतिविधियों, पेयजल और जलविद्युत उत्पादन पर असर डालते हैं।



चुनौतियाँ:

- ICIMOD's (इंटरनेशनल सेंटर फॉर इंटीग्रेटेड माउंटेन डेवलपमेंट) 2019 के आकलन के अनुसार, HKH क्षेत्र 21वीं सदी तक गर्म रहेगा, भले ही दुनिया ग्लोबल वार्मिंग को सहमत 1.5 डिग्री सेल्सियस पर सीमित करने में सक्षम हो।

पेरिस समझौते का उद्देश्य इस सदी में वैश्विक तापमान वृद्धि को पूर्व औद्योगिक स्तरों से 2 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने के प्रयास में वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को काफी हद तक कम करना है, जबकि वृद्धि को 1.5 डिग्री तक सीमित करने के साधनों का पीछा करना है।

- भविष्य में भले ही ग्लोबल वार्मिंग को पूर्व-औद्योगिक स्तर से 1.5 डिग्री सेल्सियस ऊपर रखा गया हो, HKH क्षेत्र में वार्मिंग कम से कम 0.3 डिग्री सेल्सियस अधिक होने की संभावना है और उत्तर-पश्चिम हिमालय तथा काराकोरम में कम-से कम 0.7 डिग्री सेल्सियस अधिक है।

खतरा:

हाई माउंटेन एशिया (तिब्बती पठार के आसपास की एशियाई पर्वत श्रृंखला) अगले दशकों में अपने क्रायोस्फीयर का एक बड़ा हिस्सा खो देगी और इस तरह यह जल भंडारण क्षमताओं का एक बड़ा हिस्सा खो देगी। इससे ऊंचे पर्वतीय क्षेत्रों में जल संकट बढ़ेगा।

क्रायोस्फीयर में पृथ्वी की सतह के कुछ हिस्से शामिल होते हैं जहाँ पानी ठोस रूप में होता है, जिसमें समुद्री बर्फ, झील की बर्फ, नदी की बर्फ, बर्फ का आवरण, ग्लेशियर, बर्फ की चादरें आदि शामिल हैं।

ग्लेशियरों के पिघलने का कारण:

- ग्लेशियरों का पिघलने के कारण वातावरण में मानवजनित संशोधन (अर्थात् मनुष्यों द्वारा प्रभावित) द्वारा संचालित होती हैं।
- HKH क्षेत्र पृथ्वी पर सबसे अधिक प्रदूषित स्थानों में एक है। इससे कृषि, जलवायु के साथ-साथ मानसून पैटर्न को भी खतरा है।

अनुशासः

- ग्रीनहाउस गैसों के शुद्ध-शून्य उत्सर्जन को प्राप्त करने के लिये आहार और कृषि पद्धतियों को बदलते हुए ऊर्जा, परिवहन तथा अन्य क्षेत्रों में जीवाश्म ईंधन के उपयोग को कम करने की सिफारिश की जाती है।
- इस क्षेत्र के देशों को ब्लैक कार्बन और अन्य वायु प्रदूषकों के उत्सर्जन को भी कम करने की आवश्यकता है।

समस्या को कम करने के लिये सुझाई गई नीतियाँ और कार्य:

- किसानों को स्थानीय रूप से उपयुक्त जल भंडारण समाधानों को डिज़ाइन करने और निवेश करने के लिये या कम पानी की खपत वाली कृषि पद्धतियों में अपनाने हेतु समर्थन की आवश्यकता होगी ।
- नए जलविद्युत संयंत्रों और गिरडों के डिज़ाइन में बदलती जलवायु और पानी की उपलब्धता को ध्यान में रखना होगा ।
- डेटा और सूचना, क्षमता निर्माण तथा पूर्व चेतावनी प्रणाली एवं बुनियादी ढाँचे के डिज़ाइन में सुधार की आवश्यकता होगी । इसके लिये पर्याप्त धन और बड़े पैमाने पर समन्वय की आवश्यकता है ।

भारत द्वारा की गई संबंधित पहल:

- नेशनल मिशन ऑन सस्टेनिंग हिमालयन इकोसिस्टम (NMSHE) जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) के तहत आठ मिशनों में से एक है ।
- YAH जनादेश हिमालय के ग्लेशियरों, पर्वतीय पारिस्थितिकी प्रणालियों, जैव विविधता और वन्यजीव संरक्षण तथा संरक्षण को बनाए रखना एवं उनकी सुरक्षा के उपायों को विकसित करना है ।

एकीकृत पर्वतीय विकास हेतु अंतर्राष्ट्रीय केंद्र

- ICIMOD हिंदूकुश हिमालय (HKH) के लोगों के लिये काम करने वाला एक अंतर-सरकारी ज्ञान और शिक्षण केंद्र है ।
- यह काठमांडू, नेपाल में स्थित है और आठ क्षेत्रीय सदस्य देशों - अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, चीन, भारत, म्याँमार, नेपाल और पाकिस्तान में कार्यरत है ।

स्रोत-डाउन टू अर्थ
